विद्यमान विशेषताएँ

2

एक नगर मानवीय गतिविधियों का मुख्य केन्द्र होता है। जो कि अपने परिक्षेत्र के आसपास के क्षेत्रों में विशिष्ट सम्बन्ध बनाये रखता है। इन गतिविधियों के परिणाम स्वरूप यह अपने स्वयं के कार्य-कलापों को उत्पन्न करता है। अतः यह आवश्यक हो गया है कि आने वाले दशकों में नगर के विकास को सुनियोजित एवं व्यवस्थित करने हेतु नीति निर्धारण करने एवं प्रस्ताव तैयार करने से पूर्व, क्षेत्र के सापेक्ष नगर की स्थिति इसके योगदान तथा महत्व का अध्ययन किया जावे। साथ ही इसकी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृति एवं व्यावसायिक संरचना, भू-उपयोग तथा विकास प्रणाली एवं इसकी प्रगति की प्रणाली का भी अध्ययन किया जावे, जिससे योजना मानवीय मानदण्डों के अनुरूप हो सके।

इन अध्ययनों से उन तत्वों का आंकलन किया जा सकता है तथा उन तत्वों को पहचाना जा सकता है जिनसे, नगर का विकास प्रभावित हुआ है और जो भविष्य में भी नगरीय क्षेत्र को प्रभावित करते रहेंगे। इस अध्ययन में उन सभी तत्वों एवं उनके प्रभावित करते रहेंगे। इस अध्ययन में उन सभी तत्वों एवं उनके प्रभावों का संक्षेप में उल्लेख है।

2.01 भौतिक स्वरूप एवं जलवायु :-

बीकानेर राजस्थान प्रदेश के उत्तर पश्चिम में 28 डिग्री उत्तरी अक्षांश एवं 73.19 डिग्री पूर्वी देशान्तर पर माध्य समुद्र तल से लगभग 228 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। थार रेगिस्तान के मध्य में बसा होने के कारण यहं की जलवायु लगभग सम्पूर्ण वर्ष गर्म और शुष्क रहती है। नगर के चारों ओर दूर-दूर तक रेगिस्तान के विस्तार के कारण बीकानेर में पश्चिम दिशा से धूलभरी आंधियाँ आती रहती है, जो कि राजस्थान के इस भू-भाग की सामान्य विशेषता है। यहाँ पर माह मार्च से अक्टूबर के मध्य दक्षिण पश्चिम एवं नवम्बर से फरवरी के मध्य उत्तरी दिशा की ओर से हवाएँ चलती है। तापमान में अत्यधिक उच्चता एवं गिरावट के कारण यहाँ का मौसम गर्म और शुष्क रहता है। गर्मी के मौसम (मई) में यहाँ का औसत तापमान 22 डिग्री से 47 डिग्री सेन्टीग्रेट एवं शरद ऋतु (जनवरी में यहाँ का औसत तापमान 3 डिग्री से 27 डिग्री सेन्टीग्रेट के बीच रहता है। यहाँ पर मानसून का आना

औसत से कम एवं अनिश्चित रहता है। यहाँ पर औसत वर्षा लगभग 30 सेन्टीमीटर और हवा में आर्द्रता लगभग 73 प्रतिशत रहती है।

2.02 क्षेत्रीय परिपेक्ष्य :-

बीकानेर सम्भागीय एवं जिला मुख्यालय है। यह राजस्थान के उत्तर पश्चिम में थार रेगिस्तान के मध्य में स्थित है। बीकानेर रेल एवं सड़क मार्ग से प्रदेश एवं देश के प्रमुख नगरों से भली-भांति जुड़ा हुआ है तथा यातायात व पर्यटन के दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली से लगभग 460 किलोमीटर तथा राज्य की राजधानी जयपुर से लगभग 380 किलोमीटर की दूरी पर है। बीकानेर आगरा व अजमेर से क्रमशः राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 व 89 से जुड़ा हुआ है व राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 15 पठानकोट से कांडला बीकानेर से गुजरता है। रेल मार्ग से बीकानेर, दिल्ली, जयपुर, जोधपुर, श्रीगंगानगर और कोलायत से जुड़ा हुआ है। यहाँ से लगभग 11 किलोमीटर की दूरी पर नाल के पास हवाई पट्टी है, जिसके माध्यम से बीकानेर के निकट भविष्य में देश और प्रदेश के अन्य नगरों से हवाई सेवा से भी जुड़ने की सम्भावना है।

इस रेगिस्तानी क्षेत्र की अधिकांश भूमि बालूका स्तूपों वाली काफी ऊंची और नीची है। यहां की रेतीली भूमि की उर्वरा शक्ति भी काफी कम है। इसके साथ-साथ यहाँ पर मानसून भी औसत से कम और अनिश्चित रहता है। जल स्तर काफी नीचा होने से यहाँ की कृषि वर्षा पर ही निर्भर थी जिसमें एक ही बारानी फसल होती थी। मुख्यतया ग्वार, बाजरी, तिल, मूंगफली और मोठ की खेती प्रमुख थी, किन्तु बीकानेर क्षेत्र में इन्दिरा गांधी नहर के आ जाने से यहाँ पर कृषि आधारित उत्पादनों में अप्रत्याशित परिवर्तन आया है। इन्दिरा गांधी नहर से बीकानेर के उत्तरी एवं पश्चिमी दिशा में सिंचाई की जाने लगी है तथा कपास एवं मूंगफली की पैदावार बहुत अधिक बढ़ी है। इसी तरह पूर्वी भाग एवं दक्षिणी भाग में जहां पर इन्दिरा गांधी नहर से सिंचाई नहीं हो पा रही है वहाँ पर ट्यूबवैल लगाकर खेती की जाने लगी है। अतः कुल मिलाकर बीकानेर की आज की स्थिति से यहाँ पर कृषि आधारित उद्योगों की संभावना भी बढ़ गयी है।

बीकानेर के लोगों का मुख्य व्यवसाय कृषि के साथ-साथ दूध उत्पादन, जिप्सम, मुल्तानी मिट्टी, नमक, पापड़, भुजिया, बड़ी इत्यादि है। इसके साथ खारी के वस्त्रों के उत्पादन हेतु दर्जनों खादी समितियाँ कार्यरत हैं।

यहाँ के उस्ता जाति के लोगों ने अपनी पच्चीकारी की कला के कारण भी बीकानेर का नाम देश और प्रदेश में रोशन किया है।

2.03 एतिहासिक :-

बीकानेर शहर की स्थापना सन् 1488 में जोधपुर राजवंश के राजकुमार राव बीका जी ने की थी। उनके नाम पर ही इस शहर का नामकरण हुआ। उन दिनों वह नये क्षेत्र की तलाश में अपने सैनिकों के साथ भ्रमण करते हुए यहां पहुँचे थे। प्रारम्भ में उन्होंने अपना डेरा उस जगह पर बनाया था जिस स्थान को इन दिनों बीका जी की टेकरी के नाम से जाना जाता है। यह स्थान नगर के दक्षिण में परकोटे के अन्दर लक्ष्मीनाथ जी मंदिर के पास स्थित है। इस प्राचीन नगर को आंधियों और शत्रुओं के आक्रमणों से बचाने की दृष्टि से ऊंचाई वाले स्थान पर बसाया गया था। सन् 1558 ईस्वी में शाही परिवार और इससे संबंधित संस्थाओं के लिये नगर के परकोटे से लगभग एक किलोमीटर की दूरी पर उत्तर पूर्व में नये जूनागढ़ किले का निर्माण करवाया गया। नगर के परकोटों का निर्माण सन् 1700 ईस्वी के आस पास करवाया गया। उस समय नगर की लगभग सारी आबादी परकोटे के अन्दर ही निवास करती थी। नगर का अधिकतर विकास महाराज गंगासिंह जी के शासनकाल में ही हुआ। इससे पूर्व निर्माण कार्यों में इतनी गहरी रुचि लेने वाला एवं अति-दूरदर्शी राजा शायद ही कभी हुआ हो। अपने रेगिस्तानी साम्राज्य के विकास के लिये उन्होंने गंग नहर का निर्माण करवाया। अरावली क्षेत्र के पश्चिम में बीकानेर नगर में उन्होंने पहली रेल्वे लाईन और पहला ताप बिजलीघर (रोशनीघर) बनवाया, जिससे राजकोष में आशातीत वृद्धि हुई। यह समृद्धि नगर के राजकीय भवनों, चौराहों, पार्कों के सुनियोजित विकास से दृष्टिगोचर होती है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि महाराजा गंगासिंह जी बीकानेर शहर के विकास के लिए बहुत हद तक प्रयत्नशील थे।

देश के आजादी के बाद और इसके बाद भी आने वाले समय में राजस्थान राज्य बनने के बाद राज्य का विकास कार्य पहले के समय में निर्धारित निर्देशों और तकनीकों के आधार पर करवाया गया। इन्दिरा गांधी नहर परियोजना के आ जाने से, एवं मिलट्री छावनी और रेलवे के विस्तार के साथ बीकानेर में कई केन्द्रीय और राज्य सरकार के कार्यालय इन राजकीय भवनों में स्थापित किये गये और इन्हीं भवनों को अधिकारी निवासों के रूप में भी काम में लिया गया। औद्योगिक क्षेत्र, कृषि विश्वविद्यालय, मेडिकल कॉलेज, वेटनरी कॉलेज, डिग्री कॉलेज, पॉलीटेक्निक, आई.टी.आई. इत्यादि बन जाने से नगर का विकास हुआ। बीकानेर शहर का वर्तमान विकास

मुख्यतः उत्तर दक्षिण एवं पूर्व की तरफ ही हुआ है। इसका मुख्य कारण इन तीनों दिशाओं में भूमि की सुलभ रूप से उपलब्धता एवं विभिन्न संस्थाओं का इन्हीं तीनों दिशाओं में होना है। पश्चिमी दिशा में गहरे खड्डे एवं खदानें होने से यहां पर भूमि विकास हेतु उपलब्ध नहीं हो सकी है तथा इस दिशा में कोई महत्वपूर्ण संस्थान एवं कार्यालय नहीं है। इस कारण इस दिशा में विकास कम हुआ है।

2.04 जनसंख्या :-

जनसंख्या की दृष्टि से बीकानेर शहर का राजस्थान प्रदेश में चौथा स्थान है। सर्वप्रथम जनगणना के समय 1901 में बीकानेर की जनसंख्या 53,075 थी जिसमें आने वाले दशकों में लगातार वृद्धि ही हुई है। सन् 1971 की जनगणना के अनुसार बीकानेर की जनसंख्या 2,08,894 थी। इसके बाद के दशकों में और भी अधिक गति से जनसंख्या बढ़ती हुई सन् 2001 की जनगणना के अनुसार 5,29,007 व्यक्ति तक पहुंच गई। संक्षेप में कहा जाये तो सन् 1941 से 1951 और सन् 1961-1971 के दशकों में ही जनसंख्या वृद्धि दर में कुछ कमी हुई थी, इन्हें छोड़कर शेष दशकों में वृद्धि दर में बढ़ोतरी ही होती रही है। बीकानेर की जनसंख्या में सन् 1931 से 1941 के दशक में सर्वाधिक वृद्धि हुई है। इस समय जनसंख्या वृद्धि का मुख्य कारण महाराजा श्री गंगासिंह जी द्वारा बीकानेर का विकास करना रहा है। इसी दौरान बीकानेर को रेल सेवा से कई क्षेत्रों से जोड़ा गया था। सन् 1941 से 1951 में पुनः अचानक जनसंख्या वृद्धि दर में कमी आ गयी जो कि केवल 2.41 प्रतिशत ही रही है। इस कमी का कारण गंग एवं भाखड़ा केनाल पर कृषि भूमि का आवंटन होने से जनसंख्या का पलायन एवं पाकिस्तान के रूप में भारत का बंटवारा हो जाना रहा है। इसके बाद जनसंख्या में वृद्धि दर का मुख्य कारण इन्दिरा गांधी नहर द्वारा सिंचाई की सुविधाओं में वृद्धि होने से जनसंख्या का बीकानेर की तरफ आप्रवास रहा है तथा रोजगार के लिए कर्मचारियों का यहाँ आना भी एक कारण रहा है। सन् 2001 की जनगणना के अनुसार बीकानेर की जनसंख्या दर में फिर गिरावट आ गयी है जो कि 44.69 प्रतिशत से 27.08 प्रतिशत रह गयी है। इसका मुख्य कारण इन्दिरा गांधी नहर परियोजना सिंचाई का जैसलमेर की तरफ विस्तार होना है। जनता द्वारा जैसलमेर की तरफ कृषि भूमि आवंटित करायी गयी है अथवा खरीदी गयी है। अतः बीकानेर क्षेत्र में इन्दिरा गांधी नहर परियोजना का कार्य पूर्ण हो जाने के कारण यहाँ पर जनसंख्या का आप्रवास कम हुआ है। वर्ष 1901 से 2001 तक की जनसंख्या वृद्धि को तालिका संख्या 1 में दर्शाया गया है :-

तालिका-1

जनसंख्या वृद्धि, बीकानेर 1901-2001

वर्ष	जनसंख्या	वृद्धि दर (प्रतिशत)
1901	53,075	–
1911	55,826	5.18
1921	69,410	24.33
1931	85,927	2380
1941	1,27,226	48.06
1951	1,30,293	2.41
1961	1,66,772	28.00
1971	2,08,894	25.26
1981	2,87,712	37.73
1991	4,16,289	44.69
2001	5,29,007	27.08

स्त्रोत : भारतीय जनगणना, 2001.

2.05 व्यावसायिक संरचनाः-

वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार बीकानेर शहर की कार्यशील जनसंख्या, कुल जनसंख्या का 26.66 प्रतिशत के साथ, 1,10,980 व्यक्ति थी, जो कि बढ़कर सन् 2001 तक अनुमानतया 1,58,702 हो गई है, जो कि कुल जनसंख्या का 30 प्रतिशत है। बीकानेर शहर के कुल कार्यरत व्यक्तियों में से 5 प्रतिशत प्राथमिक सैक्टर में, 61 प्रतिशत द्वितीयक सैक्टर में और 34 प्रतिशत तृतीयक सैक्टर में कार्यरत हैं। प्रथम श्रेणी में काश्तकार, खेतीहर मजदूर, पशुपालन एवं जंगलात की भागीदारी दर्ज है। द्वितीय श्रेणी में उद्योग, निर्माण, व्यापार एवं वाणिज्य, संचार एवं यातायात दर्ज है। उपरोक्त दोनों श्रेणियों के अतिरिक्त समस्त सेवायें तृतीय श्रेणी में आती हैं। अतः व्यावसायिक संरचना के वर्गीकरण एवं विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत व्यक्तियों के प्रतिशत से यह स्पष्ट है कि बीकानेर, कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य तथा अन्य सेवाओं का केन्द्र है।